The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

राजनीति में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दखल से हम क्या खोएंगे और क्या पाएंगे!

सुन्दर सिंह

शोधार्थी, तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17328795

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

राजनीतिक प्रचार चुनावी अभियान भ्रामक प्रचार

ABSTRACT

एआई राजनीति सहित गतिविधि के सभी क्षेत्रों में लोगों के जीवन को बदल रहा है। राय बनाने से लेकर चुनावी अभियानों तक असंख्य राजनीतिक गतिविधियों पर इसका प्रभाव पड़ता है। इसका उपयोग पोस्टर बनाने जैसे छोटे कार्यों या नारे या अभियान गीत तैयार करने जैसे अधिक परिष्कृत कार्यों के तक लिए किया जा रहा है। इसका सही और दुर्भावनापूर्ण दोनो ही तरीके से उपयोग किए जाने की संभावना है। प्रौद्योगिकी को अपनाने के परिणाम जो भी हों, यह निश्चित रूप से समाज और राजनीति को हमेशा के लिए बदल देगा और हम एक ही समय में अलग–अलग तरीकों से इससे होने वाले लाभ और हानि दोनो देखेंगे। लाभ के तौर पर देखा जाए तो एआई समय और पैसे दोनों की बचत में अहम योगदान दे सकता है। चुनावी अभियानों में इसकी मदद से प्रचार के काम को कम लागत में किया जा सकेगा। इसके लिए कुछ तकनीकी जानकारों की आवश्यकता पड़ेगी। एआई के कारण शायद आपको आर्टिस्ट की भी जरूरत न पड़े। इसकी मदद से एक वर्चुल किरदार आप बनाकर प्रचार कर सकते हैं। यह किरदार किसी भी मशहूर चेहरे से मिलता जुलता हो सकता है। इस तरह से चुनावी अभियान में आम जनता को आसानी से अपना संदेश दे सकते हैं। चुनावी मौसम में हर किसी ने यह महसूस किया गया होगा कि प्रचार को लेकर पार्टियां और चुनावी तंत्र बड़ा खर्चा करता है। इसमें करोड़ों रुपये झोंक दिए जाते हैं। इस कवायद में सरकारी तंत्र के साथ व्यक्तिगत रूप से किसी उम्मीदवार को बड़ी पूंजी लगानी होती है।

मतदाता के मत की भविष्यवाणी –

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से बड़े स्तर डेटा संग्रह करके उसका विश्लेषण किया जा सकता है, एआई उच्च स्तर पर सटीक मतदान पैटर्न भविष्यवाणी कर सकता है, इससे रुझान को समझने में आसानी होती है, ऐसे राजनेताओं को चुनाव की जमीनी हालत को समझने में बहुत आसानी होती है।

राजनीतिक प्रचार और चुनावी अभियान में सुधार– एआई डेटा संग्रह करके चुनावी अभियानों काफी हद तक प्रत्याशी के लिए अनुकूल बनाने में सहायता प्रदान करता है। यह रणनीतियों को सफलता पूर्वक धरातल पर उतारने में सहायक है, क्योंकि डेटा संग्रह से ये पता करना आसान है कि मतदाताओं को पसंद आने वाले मुद्दे और जरूरतें क्या है, इससे रणनीति बनाना बेहद आसान हो जाता है।

फर्जी खबरों से को चिन्हित करनाः एआई में गलत सूचना का पता लगाने में दक्ष है, इस डिजिटल युग में सबसे बड़ी समस्या ही फर्जी खबरों के बारे में पता करना और उसको चिन्हित करना है, इसके उपयोग से मतदाताओं को सही जानकारी पहुंचाया जा सकता है।

राजनीतिक प्रचार की सामग्री बनाने में मदद– चुनावी अभियानों में इसकी मदद से प्रचार के काम को कम लागत में किया जा सकेगा। इसके लिए कुछ तकनीकी जानकारों की आवश्यकता पड़ेगी। एआई के कारण शायद आपको आर्टिस्ट की भी जरूरत न पड़े। इसकी मदद से एक वर्चुल किरदार आप बनाकर प्रचार कर सकते हैं। यह किरदार किसी भी मशहूर चेहरे से मिलता जुलता हो सकता है। इस तरह से चुनावी अभियान में आम जनता को आसानी से अपना संदेश दे सकते हैं। चुनावी मौसम में हर किसी ने यह महसूस किया गया होगा कि प्रचार को लेकर पार्टियां और चुनावी तंत्र बड़ा खर्चा करता है। इसमें करोड़ों रुपये झोंक दिए जाते हैं। इस कवायद में सरकारी तंत्र के साथ व्यक्तिगत रूप से किसी उम्मीदवार को बड़ी पूंजी लगानी होती है। जब चुनाव आते हैं तो पोस्टर के साथ टीवी एड,सोशल मीडिया एड, अखबार के एड के लिए बड़ी टीम को सक्रिय किया जाता है। यह काम दो माह पहले से शुरू हो जाता है। इसमें बड़ी मैन पॉवर लगती है। एआई का चैट जीपीटी इस समय काफी लोकप्रिय हो रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह साफ्टवेयर लगातार विकसित हो रहा है। यह धीरेकृधीरे मनुष्य की सोच और व्यवहार को समझकर अपने में बदलाव ला रहा है। बताया

जा रहा है एक समय के बाद यह इंसानी दिमाग जितना तेज भी हो सकता है। इसकी मदद से क्रिएर्टिव कामों में आसानी हो सकती है। एआई की मदद से उम्मीदवार अपने वर्चुअल इमेज से भी प्रचार कर सकेगा। वह सोशल मीडिया के माध्यम अपने वर्चुअल इमेज से लोगों से जुड़ सकते हैं। इस तरह से टाइम के साथ पैसे की बचत हो सकेगी।

वहीं एआई का नुकसान उम्मीदवारों को सकता है, क्योंकि खुद सामने न आकर एआई की मदद से प्रचार करने से लोगों प्रभावित तो होंगे, मगर भावनात्मक रूप से जुड़ नहीं सकेंगे। इससे चुनाव की अहमित कम हो सकती है। लोगों में प्रचार तंत्र सिर्फ तकनीकी विज्ञान की तरह होने की संभावना हो सकती है। इस तरह से उम्मीदवारों के लिए एआई का ज्यादा उपयोग लोगों से जुड़ाव को कम कर सकता है।

भ्रामक प्रचार को बढ़ावा – इस वक्त के राजनीतिक द्वंद में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म किसी युद्धक्षेत्र से कम नहीं है, वर्तमान सोशल मीडिया पर भ्रामक और फेक राजनीतिक तथ्य पहले से कहीं अधिक तेजी से और व्यापक रूप से प्रसारित होती है, और ये बहुत गंभीर खतरा है। राजनीतिक मीम्स के साथ फेक बयान का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस किसी भी वीडियो में हुबहू आवाज या व्यक्ति विशेष को उस वीडियो का हिस्सा बनने में सक्षम है, जिससे काफी भ्रम पैदा होती है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऐसे तथ्यों को प्रचारित करने में भी मददगार है।

इसे उदाहरण के तौर पर समझने के लिए अमेरिका का उदाहरण लिया जा सकता है, AI के नुकसान को समझना हो तो ये उदाहरण सटीक है, 31 मार्च 2023 को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की एक ग्रैंड ज्यूरी ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप के खिलाफ कुछ आरोप तय किये थे, इसी बीच एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, उस वीडियो में राष्ट्रपति जो बाइडन और उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को व्हाइट हाउस में जश्न मनाते दिखाया गया, ये वीडियो लाखों लोगों तक प्रसारित किया गया, लेकिन महत्वपूर्ण बात ये थी कि जिस दिन का वीडियो में दावा किया गया था उस दिन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति दोनों ही व्हाइट हाउस में मौजूद ही नहीं थे, जब इस वीडियो की तहकीकात की गई तो पता चला कि इस वीडियो के कुछ तथ्य गलत थे, जैसे ही कमला हैरिस के हाथ का ऊपरी हिस्सा ही गायब था और भी बहुत कुछ उस वीडियो में तथ्यात्मक रूप से गलत पाया गया, इससे बाद में यह स्पष्ट हुआ कि ये वीडियो फेक था और इसे

AI की मदद से बनाया गया था, ठीक इसी तरह अमेरिका में एक बार पूर्व राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप की गिरफ्तार करने की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हुई थी, इस वीडियो में भी तथ्य के साथ छेड़छाड़ की गई थी, बाद में पता चला कि ये वीडियो भी फेक है और इसे भी AI की मदद से बनाया गया था, अब इस बात से ये अंदाजा लगाया जा सकता है कि AI भावनात्मक रूप से समाज में गंभीर स्तिथि पैदा करने में सक्षम है, AI किसी भी वीडियो के प्रारूप में बदलाव करके टकराव की स्तिथि पैदा कर सकता है, अगर जनसंख्या का कुछ प्रतिशत भी लोग AI द्वारा बनाए गए चीजों पर भरोसा कर लेता है तो बहुत गंभीर परिणाम देखने को मिल सकता है।

AI का भावनात्मक रूप से शून्य होना – राजनीति सामाजिक रूप से भावनात्मक परिपेक्ष्य से लोगों को जोड़ता है, समाज को संगठित करता है, लेकिन ।P भावनात्मक रूप से शून्य है, भावशून्य बचपन से ही हमें सिखाया गया है कि न तो कंप्यूटर और न ही अन्य मशीनों में भावनाएँ होती हैं। मानव एक टीम के रूप में कार्य करता है, मानव में टीम वर्क अर्थात संगठन बना कर काम करने की शक्ति और भाव दोनों समाहित है और वो अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए टीम वर्क करता है , जो की राजनीतिक रूप से आवश्यक है, लेकिन इस बात से को भी नकारा नहीं जा सकता है कि AI प्रभावी ढंग से काम करने के मामले में इंसानों से बेहतर और तेज है लेकिन ये भी हकीकत है कि मानवीय भाव जो कि संगठन के आधार पर बनते हैं, उन्हें AI द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोज़गार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के राजनीति में इस्तेमाल से एक और समस्या हमारे सामने स्पष्ट रूप से आ सकती है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल से लोगों की नौकरियां जाने का भी खतरा बना रहेगा. जहां एक साथ कई लोग काम कर सकते हैं उन सभी लोगों की जगह एक AI टूल आसानी से काम कर सकता है. अगर एक डिजायनर पार्टी पोस्टर बना रहा है और उसी के साथ कोई दूसरा व्यक्ति कंटेंट लिख रहा है, AI ये दोनों ही काम एक साथ बहुत आसानी से कर सकता है. इसका अर्थ ये हुआ कि दो लोगों की जगह एक AI टूल ने ले ली।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रणनीति का निर्धारण

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से रणनीति बनाने में काफी सहायता मिल सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विश्व की सभी मौजूद रणनीतियों को साझा कर सकता है। उन सभी मौजूद रणनीतियों का अध्ययन करके आप सबसे सटीक रणनीति का निर्धारण कर सकते हैं। राजनीति में इस तरह का प्रयोग काफी नया और सटीक होगा. आने वाले समय में हम इसको वास्तविकता में बदलते देख सकते हैं। अमेरिका और ब्रिटेन में राजनीति में AI का इस्तेमाल सबसे पहले देखने को मिल सकता है. आगामी अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में ऐसे प्रयोग होने की पूरी संभावना है।

राजनीति में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दखल से हम क्या खोएंगे और क्या पाएंगे! एआई राजनीति सहित गतिविधि के सभी क्षेत्रों में लोगों के जीवन को बदल रहा है। राय बनाने से लेकर चुनावी अभियानों तक असंख्य राजनीतिक गतिविधियों पर इसका प्रभाव पड़ता है। इसका उपयोग पोस्टर बनाने जैसे छोटे कार्यों या नारे या अभियान गीत तैयार करने जैसे अधिक परिष्कृत कार्यों के तक लिए किया जा रहा है। इसका सही और दुर्भावनापूर्ण दोनो ही तरीके से उपयोग किए जाने की संभावना है। प्रौद्योगिकी को अपनाने के परिणाम जो भी हों, यह निश्चित रूप से समाज और राजनीति को हमेशा के लिए बदल देगा और हम एक ही समय में अलग–अलग तरीकों से इससे होने वाले लाभ और हानि दोनो देखेंगे।

लाभ के तौर पर देखा जाए तो एआई समय और पैसे दोनों की बचत में अहम योगदान दे सकता है। चुनावी अभियानों में इसकी मदद से प्रचार के काम को कम लागत में किया जा सकेगा। इसके लिए कुछ तकनीकी जानकारों की आवश्यकता पड़ेगी। एआई के कारण शायद आपको आर्टिस्ट की भी जरूरत न पड़े। इसकी मदद से एक वर्चुल किरदार आप बनाकर प्रचार कर सकते हैं। यह किरदार किसी भी मशहूर चेहरे से मिलता जुलता हो सकता है। इस तरह से चुनावी अभियान में आम जनता को आसानी से अपना संदेश दे सकते हैं। चुनावी मौसम में हर किसी ने यह महसूस किया गया होगा कि प्रचार को लेकर पार्टियां और चुनावी तंत्र बड़ा खर्चा करता है। इसमें करोड़ों रुपये झोंक दिए जाते हैं। इस कवायद में सरकारी तंत्र के साथ व्यक्तिगत रूप से किसी उम्मीदवार को बड़ी पूंजी लगानी होती है। पता करना और उसको चिन्हित करना है, इसके उपयोग से मतदाताओं को सही जानकारी पहुंचाया जा सकता है।

राजनीतिक प्रचार की सामग्री बनाने में मदद – चुनावी अभियानों में इसकी मदद से प्रचार के काम को कम लागत में किया जा सकेगा। इसके लिए कुछ तकनीकी जानकारों की आवश्यकता पड़ेगी। एआई के कारण शायद आपको आर्टिस्ट की भी जरूरत न पड़े। इसकी मदद से एक वर्चुल किरदार आप बनाकर प्रचार कर सकते हैं। यह किरदार किसी भी मशहूर चेहरे से मिलता जुलता हो सकता है। इस तरह से चुनावी अभियान में आम जनता को आसानी से अपना संदेश दे सकते हैं। चुनावी मौसम में हर किसी ने यह महसूस किया गया होगा कि प्रचार को लेकर पार्टियां और चुनावी तंत्र बड़ा खर्चा करता है। इसमें करोड़ों रुपये झोंक दिए जाते हैं। इस कवायद में सरकारी तंत्र के साथ व्यक्तिगत रूप से किसी उम्मीदवार को बड़ी पूंजी लगानी होती है। जब चुनाव आते हैं तो पोस्टर के साथ टीवी एड,सोशल मीडिया एड, अखबार के एड के लिए बड़ी टीम को सक्रिय किया जाता है। यह काम दो माह पहले से शुरू हो जाता है। इसमें बड़ी मैन पॉवर लगती है। एआई का चैट जीपीटी इस समय काफी लोकप्रिय हो रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह साफ्टवेयर लगातार विकसित हो रहा है। यह धीरेकृधीरे मनुष्य की सोच और व्यवहार को समझकर अपने में बदलाव ला रहा है। बताया जा रहा है एक समय के बाद यह इंसानी दिमाग जितना तेज भी हो सकता है। इसकी मदद से क्रिएर्टिव कामों में आसानी हो सकती है। एआई की मदद से उम्मीदवार अपने वर्चुअल इमेज से भी प्रचार कर सकेगा। वह सोशल मीडिया के माध्यम अपने वर्चुअल इमेज से लोगों से जुड़ सकते हैं। इस तरह से टाइम के साथ पैसे की बचत हो सकेगी।